पुस्तक समीक्षा

शीर्षक ः शान्ति शिक्षा

समीक्षक ः डॉ. वृजबाला सूरी

लेखिका ः डॉ.सुनीता मगरे , श्रीमती राखी गिरीराज धिंग्रा

शिक्षा मानव के सर्वांगीण विकास का आधार है, इस पहलू को केंद्र विन्दु बनाकर विषय की प्रस्तावना वहुत आकर्षक व प्रभावी ढंग से प्रस्तुत की गई है शिक्षा क्षेत्र में इस विषय से संवंधित पुस्तकों का अभाव तो नही है परन्तु हर पुस्तक की अपनी एक विशेषता होती है, इस पुस्तक की भी अपनी विशेषता है कि यह शिक्षाशास्त्र के छात्रों व समय की मांग को देखकर लिखी गई है | डॉ.सुनिता मगरे व श्रीमती राखी धिंग्रा ने इस पुस्तक में संकल्पनाओं को सोदाहरण स्पष्ट करने का अथक प्रयास किया है | इन संकल्पनाओं को पॉच अध्यायों में विभाजित कर अपने विचारों को अभिव्यक्त किया है |

अध्याय एक में शान्ति शिक्षा की संकल्पना के अन्तर्गत अर्थ, स्त्रोत, परिभाषा, मूल्य, क्षेत्र एवम् शान्ति शिक्षा का महत्व वताया गया है |

शान्ति शिक्षा का अर्थ शांतचित्त प्रसन्नचित्त व सकारात्मक ऊर्जा का अनुभव कहानी के माध्यम से वहुत प्रभावी ढंग से स्पष्ट किया गया है | मानव शान्ति की खोज करने वाहर जाता है पर यह कहानी वताती है कि शान्ति तो हमारे भीतर ही छुपी हुई है, वस उसे तलाश करने की आवश्यकता है विश्वशान्ति व विश्व समृध्दि हेतु शान्ति शिक्षा की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नितांत आवश्यकता है इसी उदेद्श्य को समक्ष रखकर इस पुस्तक में लेखिका ने परिभाषायों व समृध्द व्यक्तियों के विचारों द्वारा अपने अनुभवों को अभिव्यक्त किया है |

आंतरिक शान्ति सामाजिक शान्ति और प्रकृति के प्रति शान्ति मूलतः तीन शान्ति शिक्षा के मौलिक स्त्रोत का स्पष्टीकरण काफी प्रशंसनीय है | इन तीन मौलिक स्त्रोत की ही शान्ति हेतु आवश्यकता है | इस संकल्पना को स्पष्ट करने हेतु कुछ मुख्य उद्देश्यों का उल्लेख वहुत प्रभावी ढंग से किया गया है | जैसे आत्म सम्मान को वनाना, सीखने की लगन होना, भविष्य के प्रति आशावादी, स्वंय के कार्य के प्रति सकारात्मकता, इन उद्देश्यो की प्राप्ति हेतु महत्वपूर्ण मूल्यों का समावेश करना आवश्यक वताया है | मूल्य जैसे आशावादिता, अभिकथन में निपुणता, स्वंय के प्रति मान की भावना का विकास आदि ये सभी तभी संभव है जव आवश्यक कौशलों के माध्यम से इन्हे छात्रों मे समाहित किया जाए इन कौशलों की व्याख्या विभिन्न पाठ्य सहभागी कियाओं के आयोजन द्वारा की गई है |

वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए विश्व को एक आशा की किरण दिखाई देती है तो वह है गौतम बुद्ध द्वारा दी गई शिक्षा और उपदेश जो सहनशीलता और विश्व शान्ति हेतु भाईचारे व बंधुत्व का महत्व बताते है | एस पुस्तक में केवल बुद्ध के दार्शनिक विचारों का उल्लेख ही नहीं किया गया अपितु कर्म का नियम जैन दर्शन और गांधी दर्शन का शान्ति हेतु योगदान का वर्णन बडी सहजता व सरलता से किया गया है |

शान्ति शिक्षा पुस्तक में महत्व एवम छात्रों में अवांछनीय व्यवहार में परिवर्तन किस प्रकार लाए जा सकते है, का उल्लेख मुख्य विन्दुओं को दर्शाते हुए सफलतापूर्वक किया गया है |

अध्याप दो शांति शिक्षा के मूलभूत सिध्दान्त के अन्तर्गत एन सी एफ द्वारा बताए शान्ति शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति हमारा मुख्य ध्येय बनता जा रहा है उदाहरण के लिए शान्ति के लिए शिक्षा को जीवनशैली में अपनाना और शिक्षा के माध्यम से शान्ति को स्थापित करना यह सन्देश यादि हमारे शिक्षकों व छात्रों तक पहुॅच जाता है, तो लेखिका सफलता की एक सीढ़ी अवश्य चढ़ जाती है | केवल एन सी एफ ही नहीं एन सी ई आर टी २००५ पी १८८ द्वारा दिए गए उद्देश्य व शान्ति शिक्षा के प्रमुख उद्देशयों का वर्णन बहुत गंभीरता व सहजता से किया गया है |

शान्ति शिक्षा के ध्येय व सिध्दान्त जिनका पालन करना हमारे जीवन के लिए अनिवार्य है, का प्रभावी वर्णन किया गया है | छात्रों के लिए इन सिध्दान्तों की जानकारी होना नितान्त आवश्यक है | इन ध्येयों की प्राप्ति और सिध्दान्तों का पालन तभी होगा जब इसके लिए उपयुक्त तरीके अपनाए जाएं इस पुस्तक में इस ओर विशेष ध्यान देकर दैनिक जीवन व शैक्षिक क्षेत्र में ध्यान देने वाली छोटी-छोटी बातों का बहुत बारीकी से उल्लेख किया है | निश्चित रूप से इस अध्यय द्वारा लेखिका बच्चों व बडों को उनको अधिकार व जागरूकता देने में और सामाजिक जिम्मेदारिया बताने में सफल रही है |

बाल्यावस्था से ही यदि बालक को तनावमुक्त एवम् दायित्वबोध की शिक्षा प्रदान की जाए तो संभव है कि भविष्य में छात्रों में आने वाली मनोवैज्ञानिक व सामाजिक समस्यों का समाधान आसान हो जायेगा और जीवन में आने वाली चुनौंतियों का सामना भी वह सहजतापूर्वक व शांतमय होकर कर सकेंगे | इसी पहलू को ध्यान में रखकर अध्याय तीन शान्ति शिक्षा की संस्कृति का लेखन कार्य किया गया है |

जिसमें संस्कृति शब्द की व्याख्या बहुत सरल व प्रभावी ढंग से की गई है | जीवन में इसे बनाये रखने के लिए छात्रों में किन मूल्यों की आवश्यकता है | इन मूल्यों को विकसित करने हेतू पाठ्यक्रम आधारित कियामें व कार्यक्रमों को सोदाहरण स्पष्ट किया गया है | शान्ति शिक्षा की संस्कृति विकासित करने का प्रमुख उद्देश क्या है इसका वर्णन एन सी ई आर टी व यु जी सी के विचारों सहित किया गया है | इस प्रयास में शिक्षक की भूमिका क्या है शिक्षक की भूमिका क्या है शिक्षक को क्या उतरदायित्व है इन सभी का वर्ण न किया गया है |

शिक्षक जब तक विद्यालय में है अपनी भूमिकाएं पूर्ण करते है लेकिन छात्र का स्वंय एवम परिवार का इस में क्या योगदान है उनका सहयोग किस प्रकार लिया जा सकता है, किस प्रकार परिवार संस्कारों में शान्ति शिक्षा को सन्मिलित कर सकता है और बच्चौं को शान्तप्रिय व्यक्ति के निर्माण हेतु किन बातों पर ध्यान देना चाहिए इन सभी को बहुत स्पष्ट रूप से बताया गया है |

शान्ति शिक्षा के चार प्रमुख पहलुओं को अनिवार्य बताया गया है - ज्ञान, कौशल, मूल्य और अभिवृत्ति | इन सभी पहलुओं के अर्न्तगत महत्वपुर्ण मुद्दों को बडी गंभीरता से प्रस्तुत किया गया है | उदाहरणार्थ ज्ञान के अर्न्तगत संघर्ष , शान्ति, न्याय, अधिकार, पर्यावरण आदि का समावेश बडीं सहजता से हुआ है | अभिवृत्ति में आत्मसम्मान खुले विचार, दृष्टिकोण, न्याय के प्रति वचनबध्दता, और मूल्य पहलू के अन्तर्गत मानवाधिकार एकात्मता संस्कृति संरक्षण अन्तराष्ट्रीयता एवम पर्यावरण सुरक्षा जैसे मूल्यों का वर्णन किया है| कौशल पहलू में समीक्षात्मक रचनात्मक विचार आत्मविश्वास और संघर्ष समाधान की बात कहकर अध्याय चार शान्ति के लिए शिक्षा प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है |

हम सभी इस बात से अवगत है कि शान्ति शिक्षा की आज सबसे अधिक आवश्यकता युवा वर्ग को है क्योंकि ये देश के भावी नागरिक है | इनकी संवेदनशीलता और उत्तेजना का सही उपयोग किया जाना आवश्यक है | इनकी सीख और दृष्टिकोण में बदलाव व सकारा- त्मकता लाना जरूरी है | ये सब तभी संभव है जब शान्ति शिक्षा को पाठ्यक्रम में स्थान दिया जाए और इस शिक्षा को उचित माध्यमों को अपनाकर सही मार्गदर्शन दिया जाए | इस अनिवार्यता को लेखीका ने अपनी पुस्तक में विषयानुसार व सोदाहरण स्पष्ट किया है |

यही नहीं इन्हें पाठ्यक्रम में किस प्रकार समन्वित किया जाए उन पद्धतियों का भी समावेश उत्तम ढंग से किया गया है | पद्धतियों में पाठ्यक्रम सहभागी क्रियाओं पर विशेष रूप से प्रकाश डाला गया है | सफलता प्राप्ति हेतु इन सब का नियोजन व व्यवस्थापन किस प्रकार होना चाहिए इसका उल्लेख इस पुस्तक में किया गया है जो वास्तव में सराहनीय है |

मै इन दोनों लेखिकाओं की प्रशंसा करती हूँ जिन्होंने एक पाठ्य पुस्तक की सभी अनिवार्य ताओं को ध्यान में रखकर इस पुस्तक का प्रकाशन किया है | डॉ . सुनिता मगरे व श्रीमती राखी ने अपनी बैध्दिकता एवम् योग्यताओं का पूर्ण परिचय इस पुस्तक के माध्यम से दिया है |

शान्ति शिक्षा पुस्तक में सभी पहलुओं का प्रभावी समावेश कर अपनी कुशलताओं व्दवारा एक सफल एवम् छात्रों व शिक्षकों के लिए उपयोगी पुस्तक का लेखन व प्रकाशन किया है | मेरे विचार से यह पुस्तक छात्रअध्यापकों एवम् विद्यालय के शिक्षको और शिक्षा महाविद्यालय के प्रोफेसर का पढ़ना नितान्त आवश्यक है क्योंकि आज हमारे देश में चारों तरफ अशान्ति फैली है, मानविय मूल्यों का अभाव दिखाई देता है, आदर सम्मान की कमी परिलक्षित होती है | लेखिका का उद्देशय हर छात्र को एक सही मानव तैयार करना है जिसके लिए शान्ति की ही आवश्यकता है |

मैं इस पुस्तक के पठन हेतू सभी पाठकों से कहना चाहूंगी कि पुस्तक में लिखित विचारों को आत्मसात कर लेखिकाओं के उद्देश्यों को सफल बनाने का प्रयास करें जो कि देश की प्रगति के लिए भी आवश्यक है |

मैं डॉ . सुनिता मगरे व श्रीमती राखी धिंग्रा को हार्दिक बधाई एवम् धन्यवाद देती हूँ जिन्होंने एक उपयुक्त पुस्तक को प्रस्तावित किया है | मैं आपके उज्ज्वल भविष्य व आने वाले समयानुसार अन्य पुस्तकों का लेखन व प्रकाशन कर देश व समाज की आवश्यकताओं की परिपूर्णता में योगदान की कामना करती हूँ|

सुझाव के रूप इतना अवश्य कहना चाहूंगी कि मुख्य विन्दुओं का थोडा विस्तार अधिक होगा तो छात्रों के लिए यह पुस्तक काफी सहायक होगी |

...